بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-22.03.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पवित्र एवं विवेक शील कथनों के प्रकाश में क़ुर्आन करीम के फ़ज़ायल, स्तर एवं प्रतिष्ठा तथा महानता का बयान।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 22 मार्च 2024, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

شَہۡرُ رَمَضَانَ الَّذِیۡ أُنۡزِلَ فِیۡہِ الۡقُرۡآنُ ہُدًی لِّلنَّاسِ وَبَیِّنَاتٍ مِّنَ الۡہُدٰی وَالۡفُرۡقَانِ ۚ فَمَنۡ شَہِدَ مِنۡکُمُ الشَّہۡرَ فَلۡیَصُمۡہُ ۚ وَمَنۡ کَانَ مَرِیۡضًا أَوۡ عَلٰی سَفَرٍ فَعِدَّۃٌ مِّنۡ أَیَّامٍ أُخَرَ ۔ یُرِیۡدُ اللّٰہُ بِکُمُ الۡیُسۡرَ وَلَا یُرِیۡدُ بِکُمُ الۡعُسۡرَ وَلِتُکۡمِلُوا الۡعِدَّۃَ وَلِتُکَبِّرُوا اللّٰہَ عَلٰی مَا ہَدٰکُمۡ وَلَعَلَّکُمۡ تَشۡکُرُوۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः तथा सूरः अलबक़रा की आयत 186 की तिलावत एवं अनुवाद के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- इस आयत में अल्लाह तआला ने इंसानों के लिए एक महान मार्ग दर्शन क़ुर्आन करीम में समस्त बातों को समेट कर अल्लाह तआला की ओर बढ़ने के समस्त रास्ते, शैतान के रास्तों से सावधान करके वर्तमान तथा भविष्य में आने वाले ख़तरों से बचने के तरीक़े और ख़ुदा तआला से सम्बंध में बढ़ने एवं हिदायत पर क़ायम रहने के रास्ते सिखा कर अन्तिम तथा सम्पूर्ण शरीअत बयान करके रमज़ान के महीने का महत्त्व बयान फ़रमाया है।

अतः भाग्य शाली हैं वे जो इस महान किताब को अपनी कार्य-पद्यति बनाकर उसके अनुसार कर्म करें तथा अपनी दुनिया व आख़िरत संवार लें तथा सच्चाई पर स्थापित हो जाएँ फिर अल्लाह तआला क अपने बन्दे से प्यार के सलूक के दृश्य भी देखेंगे। अतएव यह है रमज़ान के महीने का महत्त्व कि इस महीने में अल्लाह तआला न सम्पूर्ण शरीअत हम पर उतारी तथा इस किताब में हमें रोज़ों की अनिवार्यता तथा इबादतों के तरीक़े भी सिखाए। जब तक हम इस सम्पूर्ण हिदायत के बारे में ज्ञान प्राप्त न करें और फिर उसे

अपने जीवन का उद्देश्य न बनाएँ, हमें रमज़ान के महत्त्व का बोध प्राप्त नहीं होगा। हम अहमदी भाग्य शाली हैं कि इस बात का बोध हमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे सेवक तथा मसीह व मेहदी मअहूद ने प्रदान किया। इस लिए हमें आप अलै. की पुस्तकों तथा तफ़सीर को पढ़ने की भी आवश्यकता है ताकि इस महान कलाम तथा हिदायत को समझ कर हम इस पर अमल कर सकें।

हुज़ूर ने फ़रमाया- मसीह मौऊद अलै. दिवस है, जिसमें हम अत्यंत तत्परता के साथ जलसे इत्यादि भी करते हैं, उसे मनाते हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगोई और अल्लाह तआला के वादे के अनुसार मसीह मौऊद अलै. के आगमन के विषय में तक़रीरें करते हैं, परन्तु केवल इतनी सीमा तक ईमान की उन्नति काफ़ी नहीं बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें जो क़ुर्आन करीम के संदर्भ में ख़ज़ाना प्रदान किया है, उसको पढ़ना, उस पर अमल करना तथा उसे अपने जीवन का अंश बनाना भी अत्यंत महत्त्व पूर्ण है जिसके बिना हमारा ईमान पूरा नहीं हो सकता। रमज़ान में रोज़े रखने, फ़र्ज़ नमाज़ें नियमानुसार अदा करने अथवा कुछ नफ़लें पढ़ लेने से रमज़ान का हक़ अदा नहीं होता बल्कि क़ुर्आन करीम को पढ़ने तथा उसके निर्देश तलाश करके उन पर अमल करना भी अत्यंत आवश्यक है तथा यही बात अल्लाह तआला क रहमानियत वाले तथा रहीमियत वाले गुणों के जलवे से हमें लाभ प्राप्त करने वाला बनाएगी और इसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलै. के असंख्य कथनों तथा लेखों को पढ़ कर तथा उन पर अमल करके हम वास्तविक रंग में क़ुर्आन करीम से फ़ैज़ उठाने वाले बन सकते हैं।

रमज़ान में विशेषतः हरएक को कम से कम एक सिपारह प्रतिदिन तिलावत करनो चाहिए ताकि क़ुर्आन करीम का एक दौर पूर हो जाए। हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रमज़ान में अब तक का अवतरित हुआ क़ुर्आन करीम का एक दौर पूरा करवाया करते थे तथा अन्तिम वर्ष में क़ुर्आने करीम का दो बार दौर पूरा किया। अतएव क़ुआन करीम की तिलावत के महत्त्व को, हर एक को अपने सामने रखना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِىٓ أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ के हवाले से फ़रमाते हैं कि यही एक वाक्य है जिससे रमज़ान के महीने की महानता का पता चलता है। सूफ़ियों ने लिखा है कि यह महीना मन की शुद्धि के लिए उत्तम महीना है, इसमें प्रायः कश्फ़ होते हैं, सलात (नमाज़) आत्मा को पवित्र करती है तथा सौम (रोज़ा) दिल को रौशन करता है। फिर फ़रमाते हैं कि मैंने क़ुर्आन के शब्द में विचार किया, तब मुझ पर खुला कि इस मुबारक शब्द में एक महान भविष्य वाणी है, वह यह है कि यही क़ुर्आन अर्थात पढ़ने योग्य पुस्तक है तथा एक ज़माने में अन्य पुस्तकें भी पढ़ने में इसके साथ सम्मिलित हो जाएँगी....अब सब किताबें छोड़ दो तथा रात दिन अल्लाह की किताब ही को पढ़ो। हमारी जमाअत को चाहिए कि क़ुर्आन करीम पर मनन एवं विचार करने में तन मन धन से वयस्त हो जाएँ तथा हदीसों को पढ़ना छोड़ दें।

इस समय क़ुर्आन करीम का हथ्यिार हाथ में लो तो तुम्हारो विजय है, इस नूर के आगे कोई अंधकार न टिक सकेगा। सफल वही लोग होंगे जो क़ुर्आन करीम के आधीन चलते हैं। क़ुर्आन करीम को छोड़ कर सफलता, एक असम्भव एवं कठिन बात है। सहाबा रज़ी. के नमूनों को अपने सामने रखो, देखो उन्होंने जब

पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण किया तथा दीन को दुनिया पर प्रमुखता दी तो वे सब वादे जो अल्लाह तआला ने उनसे किए थे, पूरे हो गए। फ़रमाया- जब तक मुसलमानों का ध्यान क़ुर्आन शरीफ़ की ओर नहीं होगा, उनमें वह ईमान पैदा न होगा, वे स्वस्थ न होंगे। उत्थान एवं सम्मान उसी राह से आएगा जिस रास्ते से पहले आया था। अतः ईमान एवं अमल में उन्नति भी सांसारिक लोगों के अनुसरण से नहीं होगी बल्कि क़ुर्आन के अनुसरण से होगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- जो व्यक्ति सच्चे दिल से अल्लाह तआला पर ईमान लाता है तथा उसकी पवित्र किताब पर अमल करता है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञा पालन करता है तो अल्लाह तआला उसको असीमित बरकतां में से अंश देता है। ऐसी बरकतें दी जाती हैं जो इस दुनिया की बरकतों से अत्यधिक बढ़ कर होती हैं। उनमें से एक पापों से मुक्ति भी है अर्थात गुनाह माफ़ हो जाते हैं। अन्य लोग इस अनुकम्पा से कदापि परिचित नहीं। फ़रमाया- मेरी बातों को पूरे ध्यान पूर्वक सुनो तथा उनको दिल में जगह दो और अपने अमल से दिखाओ कि तुमने इसको सरसरी रूप से नहीं सुना तथा इनका प्रभाव केवल क्षणिक नहीं बल्कि गहरा प्रभाव है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यहाँ बैठ कर ख़ुत्बः सुनने तक प्रभाव नहीं बल्कि बाद में भी इसके अनुसार अमल हो, तथा अमल यही है कि क़ुर्आन करीम को पढ़ें। रमज़ान में इसकी आदत डालें फिर निरन्तर जीवन का अंश बनाएँ तथा फिर इसकी शिक्षानुसार हम अमल करने वाले हों।

अहमदियों पर यह आरोप लगाया जाता है कि नऊज़ुबिल्लाह हम क़ुर्आन करीम में बदलाव करने वाले हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन शरीफ़ आसमानी निजात का साधन है यदि हम इसमें बदलाव करें तो यह घार पाप है। आश्चर्य होगा कि हम यहूदियों तथा ईसाईयों पर आपत्ति करते हैं और फिर क़ुर्आन शरीफ़ के प्रति वही व्यवहार रखते हैं। मुझे और भी खेद एवं आश्चर्य होता है कि वे ईसाई जिनकी किताबें वास्तव में बदली हुई हैं, वे तो चेष्टा करें कि बदलाव साबित न हो तथा हम स्वयं बदलने की चिंता में लिप्त हैं।

आप अलै. फ़रमाते हैं मुबारक वह जो ख़ुदा के लिए अपने आप से युद्ध करते हैं तथा अभागा वह जो स्वय के लिए ख़ुदा से युद्ध कर रहे हैं और उसके साथ सम्बंध नहीं जोड़ते। जो व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए ख़ुदा के आदेश को टालता है वह आसमान में कदाचित प्रवेश नहीं करेगा, अतः तुम प्रयास करो जो एक बिन्दु अथवा मात्रा क़ुर्आन शरीफ़ का भी तुम पर गवाही न दे ताकि तुम इसी क लिए न पकड़े जाओ क्यूँकि एक कण के समान बुराई भी आपको पकड़ने के लिए पर्याप्त है। समय कम है तथा आयु की अवधि का भरोसा नहीं, तेज़ तेज़ क़दम उठाओ जो जीवन संध्या निकट है, जो कुछ पेश करना है उसे बार बार देख लो ऐसा न हा कि कुछ रह जाए तथा जीवन व्यर्थ होने का कारण हो अथवा सब गन्दी एवं खोटी धरोहर हो जो शाही दरबार में पेश करने के योग्य न हो।

अल्लाह तआला हमें वास्तविक अर्थों में क़ुर्आन करीम की शिक्षा को समझने तथा उसके अनुसार अमल करने का सामर्थ्य प्रदान करे। हम सदैव अल्लाह तआला का धन्यवाद करने वाले हों। हम केवल

रमज़ान में नहीं बल्कि सदैव क़ुर्आनी शिक्षा के अनुसार अपने जीवन व्यतीत करने वाले हों। जब यह होगा तभी हम कह सकेंगे कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने का प्रयत्न किया। अल्लाह तआला इस रमज़ान में भी तथा फिर बाद में भी सदैव हमें क़ुर्आन करीम की शिक्षा से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता रहे।

दुआओं में फ़लिस्तीनियों को भी याद रखें। युद्ध क अतिरिक्त भूख तथा बीमारी से अब बच्चों तथा निर्दोष लोगों के प्राण नष्ट हो रहे हैं। अब तो यू.एन. की संस्थाएँ भी कहने लगी हैं कि यह इंसान द्वारा उत्पन्न किया हुआ भुखमरी तथा भूख है, उपद्रव है, जो इसराईल सरकार की कठोरता एवं क्रूरता के कारण पैदा हो रहा है। यदि रास्ते खुल जाएँ तथा सहायता तुरन्त पहुंच जाए तो अभी भी सुधार हो सकता है। इसी तरह सूडान की जनता के लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला उनके लीडरों तथा सत्ताधारियों को भी बुद्धि दे, वहाँ भी लोग भूख तथा बीमारी से मर रहे हैं तथा अपने ही लोग अपने देश वासियों पर अत्याचार कर रहे हैं। यह सब इस लिए कि स्वार्थ एवं लोभ है तथा क़ुर्आन की शिक्षा को भूल गए हैं तथा जो अल्लाह तआला की ओर से भेजा गया है, इस ज़माने में, उसे मानने से इंकार कर रहे हैं। इसी तरह अन्य अनेक मुस्लिम देशों की स्थिति है, वहाँ भी काफ़ी कष्टदायक स्थिति है, शासन अपनी जनता पर अत्याचार कर रहा है, आपस में लोग लड़ रहे हैं, अल्लाह तआला इन पर दया करे। पाकिस्तान के हमारे अहमदी क़ैदी हैं, उनके लिए दुआ करें। यमन के क़ैदी हैं, उनके लिए भी दुआ करते रहें। पाकिस्तान में साधारणत्या स्थिति जो है उसके लिए भी दुआ करते रहें, अल्लाह तआला अहमदयों को सुरक्षित रखे।

हुज़ूरे अनवर ने अन्त में मुकर्रम डा. ज़हीरुद्दीन मंसूर साहब ऑफ़ अमरीका (आप हज़रत मसीह मौऊद अलै. और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-अव्वल रज़ी. के पट-नवासे तथा हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के नवासे थे), मुकर्रम हसन आबदैन आग़ा साहब ऑफ़ कैनेडा, मुकर्रम उसमान हुसैन मुहम्मद ख़ैर साहब ऑफ़ सऊदी अरब, मुकर्रम मुहम्मद ज़हराबी साहब ऑफ़ अल-जज़ायर, मुकर्रम सईद अहमद वड़ैच साहब ऑफ़ रबवा तथा मुकर्रम शहबाज़ गोन्दल साहब ऑफ़ हॉलैण्ड के निधन पर उनके सद्वर्णन तथा जमाअती सेवओं का वर्णन करने क बाद इन सबके जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा भी की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131